RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-02
February -2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com [UGC Listed Journal]

भारत में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता : एक अध्ययन

मंजू कुमारी

सहायक शिक्षिका, प्राथमिक विद्यालय, उत्तरी सैदपुर, महेन्द्रू पटना।

राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी के प्रमाण बहुत अधिक नहीं दिखते हैं। एशिया के दो महत्वपूर्ण मुस्लिम बहुल देश पाकिस्तान और बांग्लादेश में 80 और 90 के दशकों में मुस्लिम महिलाओं में राजनीतिक भागीदारी देखी गई। किन्तु सर्वोच्च राजनीतिक पदों पर रहते हुए इन्होंने अनेक कठिनाइयों का सामना किया। साधारणतया मुस्लिम समाज में बहुतायात यह स्वीकार किया जाता है कि मुस्लिम महिलाओं की भूमिका घर की चाहरदिवारी तक सीमित है। इस्लाम उन्हें उनकी समानता का पक्षधर तो है किन्तु पुरूष प्रधान मुस्लिम समुदाय इनकी भूमिका और सक्रियता को घर के अन्दर तक ही सीमित रखने का विचार रखता है। महिलायें भी यह समझती है कि राजनीति में सहभागिता उनके लिए दूर की चीज है और इसलिये इसे पुरूषों के लिये छोड़ना कहीं ज्यादा बेहतर है। वह घर में रहने, घर का कामकाज करने और बच्चों का परवरिश करना स्वयं के लिये हितकर समझती है। हालांकि कुछ मुस्लिम महिलाओं के विचार इससे थोड़ा अलग है, किन्तु वह भी राजनीतिक सहभागिता के बनिस्बत स्वयं को अन्य क्षेत्रों में अपनी भागीदारी को अधिक पसंद करती है। इस शोध–आलेख के द्वारा यह जानने के प्रयास किया जायेगा कि भारत में मुस्लिम महिलाओं का राजनीति में सहभागिता के संदर्भ में क्या स्थिति है? क्योंकि आजादी के 70 वर्षों के बाद भी भारत की राजनीति में मुस्लिम महिलाओं का स्थान अत्यन्त अल्प है। जबकि भारत की कुल जनसंख्या का 14.9 प्रतिशत आबादी मुसलमनों की है और उनमें से सात (7) प्रतिशत मुस्लिम महिलाये हैं। ये राज्यों की राजनीति के साथ–साथ भारत की राजनीतिक परिदृश्य के एक प्रमुख निर्धारक भी है।

कुंजी शब्द – सहभागिता, इस्लाम, समुदाय,

अध्ययन प्रारूप : शोध–आलेख का मुख्य विषय ''भारत में मुस्लिम महिलाओं की राजनीतिक सहभागिता' है। आलेख में भारत की राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी से संबंधित तथ्यों का विश्लेषण किया गया है। वर्णनात्मक पद्धति पर आधारित इस शोध–आलेख में तथ्यों का संकलन 200 मुस्लिम महिलाओं से साक्षात्कार द्वारा प्राप्त किया गया है। विभिन्न शोध–पत्रिकाओं, शोध–ग्रन्थों से प्राप्त सूचनाओं का संकलन द्वितीयक स्त्रोत से प्राप्त सहायक सामग्री हैं।

विश्लेषण :

राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की नगण्य भागीदारी का सबसे महत्वपूर्ण कारण मुस्लिम समुदायों के समाज की पैतृक संरचना है। इस्लाम की परंपरा, संस्कृति और समाज की परंपरागत रिवाज और धारणाएँ राजनीति में महिला की भागीदारी का निषेध करती है। इस्लाम में महिला नेतृत्व के प्रश्न पर प्रचलित धारणाएँ राजनीति में महिलाओं को नेतृत्व के योग्य नहीं मानता है। परंपरावादी विचारधारा इस तथ्य में विश्वास करता है कि पुरूषों की अपेक्षा इस कार्य के लिये महिला कदापि सक्षम नहीं हो सकती। ऐसे विचार को वे इस्लाम की प्राचीन धारणाओं से जोड़ते हैं। महिला उत्तरदात्रियों से प्राप्त सूचना के आधार पर राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी को निम्नवत देखा गया–

राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी	योग	
मतदान किया	प्रथम बार	10 (5 प्रतिशत)
	दूसरा बार	42 (21प्रतिशत)
	दो बार से अधिक	148 (74प्रतिशत)
	कुल योग	200
राजनीतिक दलों की सदस्यता	हाँ	–
	नहीं	200
	कुल योग	200
राजनीति में भागीदारी के लिए सहमति प्राप्त किया	परिवार	–
	समुदाय	–
	राजनीतिक दल	–
	कोई समर्थन नहीं	200

RRIJM 2015, All Rights Reserved

राजनीतिक जागरूता	हाँ	69
	नहीं	131
	कुल योग	200
समुदाय द्वारा समर्थित राजनीतिक दलों की सदस्यता	हाँ	8
	नहीं	192
	कुल योग	200
चुनाव लड़ी	हाँ	8
	नहीं	192
	कुल योग	200

अवलोकन से स्पष्ट होता है कि 200 उत्तरदात्रियों में से 148 अर्थात् 74 प्रतिशत ने दो बार से अधिक मतदान की। 42 अर्थात् 21 प्रतिशत ने दो बार मतदान किया और 10 अर्थात् 5 प्रतिशत उत्तरदात्रियों ने पहली बार चुनाव में मतदान किया। यहॉ उनके समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका भी दृष्टिगोचर होती हैं, क्योंकि वे महिलाओं को मतदान नहीं करने के लिए प्रेरित करते हैं। महिलाएॅ ऐसे राजनीतिक दलों से प्रभावित होकर चुनाव में राजनीतिक भागीदारी प्रदर्शित करती हैं जो मुस्लिम समुदाय से जुड़ा हुआ है और जिसका गठबंधन किसी बड़ी राष्ट्रीय पार्टी से भी है।

लोकसभा–

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद 17 लोकसभा चुनावों में 481 महिलायें लोकसभा के लिये निर्वाचित हुई, जिनमें से 24 मुस्लिम समुदाय की महिला थी। यदि मुस्लिम महिलायें अपने जनसंख्या के अनुपात मे प्रतिनिधित्व करती तो हमेशा 35 से अधिक संख्या में होती। विचारणीय यह है कि इस राष्ट्र की कुल आबादी का 14.9 प्रतिशत मुस्लिमों की है। कुल 14.9 प्रतिशत मुस्लिमों में 7 प्रतिशत महिला है। किन्तु 16वीं लोकसभा में अधिकतम चार मुस्लिम महिला सदस्य हुई। पॉच अवसर ऐसे भी आये जब लोकसभा में मुस्लिम समुदाय की एक भी महिला निर्वाचित नहीं हो सकी।

यह सारणी लोकसभा में मुस्लिम महिला के प्रतिनिधित्व को प्रदर्शित करते हैं–

चुनाव का वर्ष	महिला सांसदों की संख्या	मुस्लिम महिला सांसद
1952	11	0
1957	19	2
1962	20	1
1967	25	0
1971	28	0
1977	34	4
1980	49	1
1984	42	3
1989	27	1
1991	25	0
1996	29	1
1998	28	0
1999	31	1
2004	34	2
2009	30	2
2014	22	4
2019	27	2
योग	481	24

राज्यसभा : राज्यसभा के 242 सदस्यों में से तीस मुस्लिम थे और उनमें से मात्र चार सदस्य मुस्लिम महिला थी। 28 अक्टूबर, 2014 तक । 1952 से 2010 तक राज्यसभा में मात्र 15 मुस्लिम महिला सदस्य रही।

राज्यों के विधानमण्डल :

कुछ इसी प्रकार के ऑकड़े राज्यों के विधानमण्डल भी प्रदर्शित करते हैं। अब तक 8 प्रतिशत से कम मुस्लिम महिलाएं विधानमण्डल के सदस्य हो सकी है। उच्च पदों पर इनका स्थान इनकी राजनीतिक उपेक्षा को दर्शाता हैं। 17वीं

RRIJM 2015, All Rights Reserved

लोकसभा तक इस देश में एक मात्र महिला प्रधानमंत्री हुईं। किन्तु, कोई मुस्लिम महिला इस पद पर आसीन नहीं हो सकी है। इसी प्रकार भारत के राष्ट्रपति के पद पर अब तक एक भी मुस्लिम महिला निर्वाचित नही हुई है। 29 राज्यों और 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में से मात्र तीन राज्यों की मुख्यमंत्री महिला हैं, किन्तु उनमें से कोई मुस्लिम नहीं है। राज्यपाल और लेफ्टिनेंट गर्वनर जैसे संवैधानिक एवं उच्च पदों पर भी इनकी भागीदारी अल्प है।

सरकार की संरचना में मुस्लिम महिला–

सरकार की संरचना में मुस्लिम महिलाओं की भागीदारी नगण्य है। संघीय सरकार के संचालन में कैबिनेट बड़ा ही अहम होता है। कैबिनेट मंत्री सरकार की गतिविधियों के अत्यन्त निकट होते हैं और स्वतंत्र प्रभार वाले मंत्री और राज्य मंत्रियों का भी महत्व होता है।

16वीं लोकसभा में कुल सात (7) महिला कैबिनेट मंत्री में से मात्र एक नेजमा हेपतुल्ला मुस्लिम समुदाय से थी जिन्हें अल्पसंख्यक कल्याण मंत्रालय का भार सौंपा गया था। 17वीं लोकसभा में मात्र तीन महिला को केन्द्रीय मंत्रालय में स्थान मिला जिनमें से एक भी मुस्लिम समुदाय से नहीं थी। भारत के 15 राज्यों की सरकार में एक भी मंत्री मुस्लिम महिला समुदाय से नहीं है। ये राज्य हैं– असम, अरूणाचल प्रदेश, हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, कर्नाटक, मणिपुर, मेघालय, मिजोरम, नगालैण्ड, ओडिशा, सिक्किम, त्रिपुरा और उत्तराखण्ड। इसी प्रकार पश्चिम बंगाल राज्य सरकार में 7 (सात) मुस्लिम मंत्री हैं किन्तु उनमें से कोई महिला नही हैं। भारतीय जनता पार्टी शासित ग्यारह (11) राज्यों की सरकार में से उत्तर प्रदेश में मात्र एक कैबिनेट मंत्री मुस्लिम समुदाय से हैं। जबकि इस राज्य में भारत में मुसलमानों की कुल जनसंख्या का लगभग बीस (20) प्रतिशत हैं। प्रदेश में 2017 के विधानसभा चुनाव में पार्टी ने किसी भी मुस्लिम महिला को उम्मीदवारी के लिए योग्य नहीं माना।

मुस्लिम महिलाओं के समक्ष राजनीतिक सहभागिता में आनेवाली बाधाएँ :

बाधाएं		योग
समर्थन का अभाव	परिवार से समुदाय से राजनीतिक दल से कुल योग	65 93 42 200
धार्मिक दलों द्वारा प्रतिबंध	हॉ नहीं कुल योग	114 86 200
जागरूकता का अभाव	हॉ नहीं योग	134 66 200
शिक्षा का अभाव	हॉ नहीं योग	146 54 200
राजनीतिक ज्ञान का अभाव	हॉ नहीं योग	187 13 200
सांस्कृतिक मूल्य	हॉ नहीं योग	191 09 200

RRIJM 2015, All Rights Reserved

सारणी यह प्रदर्शित करता है कि अनेक कारक मुस्लिम महिलाओं को राजनीतिक सहभागिता के लिए प्रतिबंधित करती है। मुस्लिम महिलायें अपने परिवार, समुदाय, राजनीतिक दल आदि के सहमति के बिना राजनीति में सहभागिनी होना पसंद नहीं करती है। 200 उत्तरदात्रियों में से 93 ने कहा कि उन्हें उनके समुदाय से समर्थन प्राप्त नहीं है। 65 ने इसके लिए परिवार के सर्मथन का अभाव माना। जबकि 42 उत्तरदात्रि ने राजनीति में अल्प सहभागिता के लिए राजनीतिक दलों को जिम्मेवार माना। इनका मानना था कि उनके समुदाय से जुड़े धार्मिक पार्टी उन्हें राजनीति में सहभागी होने के खिलाफ हैं। राजनीतिक जागरूकता का अभाव भी इनके समक्ष सबसे बड़ी चुनौती है। इस संदर्भ में 34 उत्तरदात्रियों ने अपना उत्तर 'हॉ' में दिया। मुस्लिम समुदाय के महिलाओं में शिक्षा का अभाव भी उनके राजनीतिक सहभागिता के लिए एक बाधक है। शिक्षा सम्पूर्ण व्यक्तित्व के विकास के एक अहम भूमिका अदा करती है। वैचारिक स्वतंत्रता, समाजीकरण जैसी तमाम चीजों के सकारात्मक और नकारात्मक पक्षों पर व्यापक तौर से स्व–मूल्यांकन और विश्लेषण करना शिक्षित व्यक्ति द्वारा संभव होता है। 200 उत्तरदात्रियों में से 146 ने यह स्वीकार किया कि मुस्लिम महिलाओं में शिक्षा का अभाव है। यह उन्हें उनके वैचारिक स्वतंत्रता, आत्मनिर्भरता को प्रभावित करता है। राजनीतिक प्रश्नों पर निर्णय लेने के लिए उन्हें परिवार के अन्य शिक्षित सदस्यों पर निर्भर होना पड़ता है। साथ–साथ इस्लाम धर्म और इस्लामिक संस्कृति महिलाओं को राजनीति में भागीदारी का निषेध करती है। महिलाओं में राजनीतिक सहभागिता के प्रति उदासीनता के लिए प्रमुख कारक मुस्लिम समुदाय का परंपरावादी विचार भी है। धार्मिक परंपराऍं और सांस्कृतिक मूल्य महिलाओं को राजनीति में सहभागिणी की तुलना में उन्हें 'पत्नी' के रूप में स्वीकार करना अधिक पसंद किया है। जैसा कि उपरोक्त ऑकड़े प्रदर्शित करते है कि 200 में से 194 महिला उत्तरदाताओं ने इस्लाम धर्म की सांस्कृतिक मूल्यों और परंपराओं को राजनीति में उनके अल्प भागीदारी के लिए एक प्रमुख कारक माना है।

निष्कर्ष :

मुस्लिम महिलायें इस्लाम धर्म के विचारों से नियंत्रित होती हैं और वह ऐसा विश्वास करती हैं कि उनका धर्म उन्हें राजनीति में प्रवेश करने से रोकता है। मुस्लिम महिलाओं पर धार्मिक नियंत्रण के कारण भारत की राजनीति में मुस्लिम महिलाओं की अल्प सहभागिता है। इस्लामिक संस्कृति, परंपराएं और रिवाज मुस्लिम महिलाओं को अन्य दायित्वों के बदले 'पत्नी' के दायित्व में स्वीकार करना अधिक श्रेयस्कर समझता है। राजनीतिक प्रश्नों पर इनके विचार स्वतंत्र नहीं पाये गये। परिवार और मुस्लिम समुदाय के पुरूषों के मंतव्य का ये अनुसरण करती है। अध्ययन से यह भी ज्ञात होता है कि शिक्षा का अभाव के कारण भी महिलायें राजनीतिक सहभागिता में रूचि नहीं रखती है। मतदान व्यवहार, राजनीतिक दलों को समर्थन देना अथवा न देना आदि गतिविधियों पर महिलायें मुस्लिम समुदाय के पुरूषों पर निर्भर है और राजनीतिक मुद्वों पर मुस्लिम पुरूष के विचार इस्लाम धर्म के मूल्यों और परंपराओं से प्रभावित होता है।

संदर्भ ग्रन्थ :

1. Rahman, F.N. (2012). An Islamic Perspective on women in the political system.
2. Muslim women's League (1995)' Women in society: Political Participation, Essay, political Rights. (1999-2013)
3. Subodh verma (2016, January,04). only 33% of muslims work, lowest among all religions. Times of India, october13,2016 from http://timesof indiatimes.com
4. census of India, 2011
5. Muslim women in Indian politics, Dr. Praveen qamar.
6. www.researchgate.com Political exclusion of muslim in india, Prakash Ramchandra Pawar, october 2014

RRIJM 2015, All Rights Reserved